F-11
B.El.Ed 1st year

MUSIC

हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति

* हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति को उत्तरी संगीत पद्धति भी कहते है। यह चेन्नई मैसूर तथा आन्ध्र तेलंगाना को छोड़कर शेष। समस्त भारत में प्रचलित है।

1. हिन्दुस्तानी पद्धति में शुद्ध-विकृत मिलाकर कुल 12 स्वर स्थान है।
2. इस पद्धति में आलाप गान स्वीकार किया गया है।
3. ठाठ राग का सिद्धान्त स्वीकार किया गया है।
4. हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति में दस ठाठ से रागों की उत्पत्ति हुई है।
5. हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के शुद्ध स्वर को बिलावल - ठाठ कहा जाता है।

लोकगीत

लोकगीत जनमानस के स्वाभाविक उद्गारों का प्रस्फुटन है। लोकगीत ही जनता की भाषा है। (महात्मागाँधी) लोक शब्द से अभिप्राय व्यक्तियों के ऐसे समूह से होता है जो सामान्य संस्कार सामान्य गौरव सामान्य चिन्तन, सामान्य शास्त्रज्ञान आदि तत्वों से परिपूर्ण होता है जो इस दृष्टि से सम्पूर्ण भारतीय मानव समाज को लोक कहते है। इस लोक की भावनाओं को प्रकट करने वाली वाणी को लोकगीत कहते है

लोक जीवन में लोकगीतों की एक निरन्तर धारा अनादि काल से चली आ रही है ये लोक गीत मानव हृदय की प्रकृति भावनाओं की तन्मयता की तीव्रतम अवस्था की गति है जो स्वर और ताल को प्रधानता न देकर लय अथवा धुन प्रधान होते है

बालगीत

वर्तमान में प्राइमरी कक्षा के छात्र मानसिक रूप से अधिक विकसित नही होते उन्हें गीतों

Scanned with CamScanner

की शिक्षा देते समय उनके मानसिक विकास, अभिरुचि तथा शाब्दिक विकास को ध्यान में रखना आवश्यक है। शाब्दिक दृष्टि से सरल शब्दावली और मनोरंजनात्मक विषय से सम्बन्धित गीतों उनको पढ़ाना लाभप्रद है

लोरी

यह एक प्रकार का गीत है जो बालक को लोरी के रूप में सुनाया जाता है। इसमें बालक जब सोता है, तो उसकी माँ उसे लोरी गाकर सुलाती है। इनकी धुन व पद्य निश्चित होते हैं।

गोरबन्द

ऊँट की सजावट करते समय काठी के पास से गोरबन्द गर्दन पर बाँधा जाता है। इसमें ऊँट का शृंगार वर्णन मिलता है राजस्थान का बड़ा लोकप्रिय गीत है और लगभग समस्त मरुस्थलीय प्रदेश में गाया जाता है। अजमेर के सांसी कंजर और मारवाड़ की धूमर नृत्य करती बालिकाएँ भी इसे गाती हैं।

Scanned with CamScanner